प्रतिनिधि हिन्दी उपन्यासों में चित्रित आदिवासी जीवन मूल्य
(सन् 2000 से 2015)

दयालबाग़ एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी) दयालबाग़
आगरा की हिन्दी विषय की पी–एच.डी.
उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की

'रूपरेखा'

सन्–2015

निर्देशिका :

प्रो. शर्मिला सक्सेना
हिन्दी विभाग
कला संकाय

शोधार्थिनी :

उपमा शर्मा
एम.ए., एम.फिल् (हिन्दी)

हिन्दी विभागाध्यक्ष

प्रो. शर्मिला सक्सेना

कला संकाय प्रमुख

प्रो. रागिनी रॉय

(हिन्दी विभाग – कला संकाय)
दयालबाग़ एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी) दयालबाग़
आगरा– 282005

प्रतिनिधि हिन्दी उपन्यासों में चित्रित आदिवासी जीवन मूल्य
(सन् 2000 से 2015)

शोध परिचय–लेखक एक संवेदनशील प्राणी होता है और वह समाज में घटित घटनाओं से प्रभावित होकर साहित्य का सृजन करता है और अपने साहित्य के माध्यम से समाज में व्याप्त सकारात्मक और नकारात्मक पक्षों से रूबरू कराता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का कहना है कि साहित्य समाज का दर्पण होता है अर्थात जिस प्रकार दर्पण व्यक्ति को उसकी वास्तविकता से अवगत कराता है उसी प्रकार साहित्य समाज का यथार्थबोध करवाता है और यह यथार्थबोध साहित्यकार अपने अनुभवों के माध्यम से अभिव्यक्त करता है।

उपन्यास वर्तमान युग की एक सशक्त विधा है और हिन्दी–साहित्य की अन्य विधाओं की तुलना में उपन्यास सामाजिक यथार्थ, नए मानव मूल्य, सभ्यता और संस्कृति आदि को प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त कराने में कारगर सिद्ध हो रहा है। प्रारम्भ में मनोरंजन प्रधान, घटना प्रधान और ऐतिहासिक उपन्यास लिखे गये। इसके बाद व्यक्तिपरक, सामाजिक उपन्यासों की रचना हुयी लेकिन प्रेमचन्द के आगमन के पश्चात् व्यक्तिपरक चित्रण पर बल दिया गया। प्रेमचन्द युग में आदिवासी साहित्य का सृजन के बराबर देखने को मिलता है। सन् 1960 के उपरान्त हिन्दी उपन्यास कथा जगत में आदिवासी विषय को लेकर लेखन कार्य प्रारम्भ होने लगा।

आदिवासी शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है। **'आदि+वासी'** आदि का अर्थ है **मूल** और वासी का अर्थ है **'रहने वाले'** अर्थात् ऐसे व्यक्ति जो सृष्टि के आरम्भ में जिस प्रकार प्रकृति से जुड़कर मूल रूप से रहते थे और उन्हीं प्राकृतिक संसाधनों का प्रयोग करके अपना जीवन–यापन करते थे ऐसे व्यक्ति आज भी समाज में उपस्थित हैं और उन्हें आदिवासी के नाम से जाना जाता है। ऐसे लोगों के ऊपर लिखा गया साहित्य जिनमें उनके सुख, दुःख, हर्ष, विषाद, आकांक्षाएँ, अपेक्षाएँ एवं विविध समस्याएँ अनुस्यूत हैं, वे आदिवासी साहित्य के अन्तर्गत आते हैं। आदिवासी प्रकृति से जुड़े रहते हैं और भौतिक समाज से दूर रहते हैं जिसके कारण आदिवासियों के पास शिक्षा का अभाव होता है इसीलिए उन्होंने अपने सुख,

दुःख का वर्णन स्वयं बहुत ही कम साहित्य में किया है। अब इस समाज के कुछ लोग शिक्षित हो गये हैं और वे अब कलम के धनी भी हैं उन्होंने अपनी समस्या के ऊपर स्वयं लिखना आरम्भ कर दिया है इस सब का तात्पर्य यह नहीं है कि उनके द्वारा रचा गया साहित्य ही आदिवासी साहित्य के कोटि में आयेगा, बल्कि जो रचनाकार स्वयं आदिवासी नहीं हैं लेकिन वह आदिवासी समाज से परिचित हैं और उन्होंने आदिवासी जनजीवन, रहन–सहन, संस्कृति व उनके समस्याओं को कलमबद्ध किया है वह सभी साहित्य आदिवासी साहित्य की श्रेणी में रखा जा सकता है किन्तु स्वाधीनता प्राप्ति के बाद देश की राजनीति व्यवस्था ने आदिवासियों को यद्यपि कुछ संवैधानिक अधिकार दिये किन्तु अशिक्षा के कारण उसकी रोशनी उन तक नहीं पहुँच पायी, ऐसे में समाज के तथाकथित नेता, ठेकेदार, जमींदार, साहूकार आदि ने उनका शोषण किया और वे शोषित होकर गरीबी में अपना जीवन आज भी बिता रहे हैं। वस्तुतः आदिवासी समाज में भी कई समस्याएँ है जिन्होंने आदिवासियों के समक्ष अपने अस्तित्व को बचाये रखने का संकट उत्पन्न कर दिया है आदिवासियों को समाज में आदर व सम्मान प्राप्त नहीं है। देश के पहले आदिवासी उपन्यासकार **'मेनस ओडेया' (1884–1968)** थे जिन्होंने प्राचीन मुंडारी भाषा में सन् 1920 के आसपास **''मतुराज कहीन''** नामक उपन्यास लिखा।

भारतवर्ष में 300 से अधिक 'आदिवासी जनजातियाँ' पायी जाती हैं। कर्नाटक में 'लमबानी', मणिपुर में 'जालियांग', हिमाचल प्रदेश में 'किन्नरी', उड़ीसा में 'उरांव', नागालैण्ड में 'आओं', 'चाकाशंग', 'यमंगलिजर', अरूणाचल प्रदेश में 'हिलमिरी', 'अपातनी', गुजरात में 'मील', राजस्थान में 'मील', 'मीना', 'गरासिया', 'डामोर' और 'सहरिया', नेपाल में 'थारू', झारखण्ड में 'असुर' आदि प्रमुख जनजातियों के नाम सामने आते हैं। 19वीं सदी के आदिवासी हिन्दी उपन्यासकारों ने भी विभिन्न जनजातियों को केन्द्र में रखकर साहित्य का सृजन किया और अपने साहित्य के माध्यम से उनके जीवन में व्याप्त समस्याओं का बड़ा ही मार्मिक चित्रण किया है, जिनके नाम इस प्रकार है–

राजेन्द्र अवस्थी– 'जंगल के फूल (1960)उदयशंकर भटट् सागर, लहरें और मनुष्य (1964) राजेन्द्र अवस्थी– 'सूरजकिरन की छांव' (1979), शानी–'नदी और सीपियाँ (1970) बलवन्त सिंह– 'राका की मंजिल (1971), रांगेय राघव– ''धरती मेरा घर'' (1975), कृष्ण चन्द

शर्मा 'भिक्खु'–'रक्त यात्रा' (1978), रांगेय राघव–'कब तक पुकारू' (1980), मणि मधुकर– पिंजरे में पन्ना (1981), नागार्जुन– वरुण के बेटे (1984), हिमांशु जोशी– महासागर (1987) आदि।

20वीं सदी के हिन्दी आदिवासी उपन्यासकारों में मुख्य रूप से– मधु काँकरिया–'खुले गगन के लाल सितारे' (2000), रणेन्द्र–'ग्लोबल गाँव का देवता' (2001) तेजिन्दर– 'काला पादरी' (2002), राकेश कुमार सिंह– 'पठार पर कोहरा' (2003),–'जो इतिहास में नहीं है' (2005), मंगल सिंह मुण्डा–'छैला सन्दु' (2004), भगवान दास मोरवाल–'काला पहाड़' (2004), विनोद कुमार शुक्ल–'समर शेष है' (2005), श्री प्रकाश मिश्र–'रूपतिल्ली की कथा' (2006), हरिराम मीणा– 'जंगल जंगल जलियावाला' (2008), 'धूणी तपे तीर' (2008), संजीव– 'धार'(2009), 'जंगल जहाँ से शुरू होता है' (2010), मैत्रेयी पुष्पा–'अल्मा कबूतरी' (2011), संजीव रंजन प्रसाद– 'आमचों बस्तर' (2012), विपिन बिहारी–'हमलावर' (2013), रणेन्द्र–'गायब होता देश' (2014) मनमोहन पाठक–'गगन घटा घहरानी' (2015), महुआ माजी– 'मरंग गोड़ा नीलकंठ हुआ'(2015) आदि आते हैं। बीसवीं सदी के प्रस्तुत सभी उपन्यास मेरे शोध अध्ययन के आधार ग्रन्थ हैं।

प्रस्तुत शोध विषय की प्रेरणा व चयन–साहित्य के किसी भी विषय को शोध अध्ययन का आधार बनाने से पहले उसकी पूरी अवधारणा व उसके प्रत्येक प्रतिमान से परिचित होना पड़ता है। मैं स्वयं आदिवासी इलाके (असम) में 'बाली जूड़ी काजी रंगा' प्रान्त में रही हूँ और निवास के समय में ज्यादातर वहीं घूमने जाती थी तो उनकी जीवन शैली मेरे मानस को निरन्तर उद्वलित करती रहती थी। इसके पश्चात् मेरे पिता का स्थानान्तरण बिहार हो गया वहाँ 'अलावलपुर' निवास के समय 'मुसहर' (आदिवासी) जनजाति से मिली। सामान्य रूप से 'मुसहर' जनजाति गरीबी और अशिक्षा से लड़ रही है। वहाँ इस जनजाति को खेतों में भी किसी प्रकार का काम नहीं दिया जाता । वस्तुतः भूख जब उन्हें व्याकुल कर देती है तो वे खाली खेतों में से अनाज के दाने एकत्रित कर अपने पेट की आग बुझाते हैं वे दाने इतने पर्याप्त नहीं होते कि उनकी पेट की ज्वाला को शांत कर सकें ऐसे में चूहों को मारकर एवं खाकर वे अपने भूख शमित करते हैं। सम्भवतः इतने निकट से आदिवासियों के जीवन को

देखने के उपरान्त मेरे मन का उद्वेलन और बढ़ गया। जब मेरा शोध छात्रा के रूप में इस विश्वविद्यालय में चयन हो गया तो मेरा मन इनकी समस्याओं को और उनके समाधान को खोजने के लिए उत्सुक हो उठा। ऐसे में मेरी शोध निर्देशिका प्रो0 शर्मिला सक्सेना ने इस विषय पर कार्य करने के लिए प्रेरित किया। आपसी चर्चा के बाद मैंने **''प्रतिनिधि हिन्दी उपन्यासों में चित्रित आदिवासी जीवन मूल्य (सन् 2000–2015)''** विषय को अपने शोध कार्य के अध्ययन का आधार बनाने का निश्चय किया।

विषय के निर्धारण एवं रूपरेखा के निर्माण में मेरी शोध निर्देशिका **प्रो० शर्मिला सक्सेना** ने सहायता की। तदुपरान्त विषय से सम्बन्धित सामग्री संचयन हेतु मैं केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा, अम्बेडकर विश्वविद्यालय के पुस्तकालय एवं दयालबाग एजूकेशनल इंस्टीट्यूट के पुस्तकालय में कई बार गयी और वहाँ मैंने अध्ययन किया। मेरी शोध निर्देशिका ने आदिवासी साहित्य से संदर्भित (विशेषांक) पत्रिकाएँ मुझे पढ़ने के लिए दिए। इसके साथ ही संचार माध्यम इंटरनेट ने भी सामग्री संचयन में मेरी सहायता की। अपने गुरुजनों से इस विषय पर कार्य करने के लिए वार्ता की और सभी से वार्ता करने के उपरान्त **''प्रतिनिधि हिन्दी उपन्यासों में चित्रित आदिवासी जीवन मूल्य (सन् 2000–2015)''** विषय पर शोध कार्य करने का निश्चय किया।

प्रस्तुत शोध विषय का उद्देश्य–प्रस्तुत विषय **''प्रतिनिधि हिन्दी उपन्यासों में चित्रित आदिवासी जीवन मूल्य (सन् 2000–2015)''** के अध्ययन में मेरे द्वारा आदिवासी समाज के जीवन संघर्षों व जटिल समस्याओं को अभिव्यक्त करने की चेष्टा की जायेगी। आज की सदीं में मानव अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए जंगलों में रहने वाले लोगों की अस्मिता के साथ खिलवाड़ कर रहा है और इन आदिवासियों को इस कगार पर पहुँचा दिया है कि आज इनका समाज में अस्तित्व नगण्य रह गया है। प्राकृतिक सम्पदाओं से जहाँ इनकी आवश्यकताओं की पूर्ति होती थी आज व्यक्ति उसी सम्पदा (वन) को नष्ट करता जा रहा है जिससे इनके लिए अनेक समस्याएँ– भुखमरी, बेरोजगारी आदि उत्पन्न होती जा रही हैं। इन समस्याओं का यदि निराकरण नहीं किया गया तो आदिवासी लोगों का अस्तित्व ही संकट में आ जायेगा। आदिवासी हिन्दी उपन्यासकारों ने आदिवासी समाज के अन्दर विद्यमान समस्याओं को

परत–दर परत खोलने का सफल प्रयास किया है। इसलिए इन सभी **''प्रतिनिधि हिन्दी उपन्यासों में चित्रित आदिवासी जीवन मूल्य (सन् 2000–2015)''** का अध्ययन करना मेरे शोध कार्य का उद्देश्य है। आदिवासी हिन्दी उपन्यासकारों के उपन्यास के माध्यम से आदिवासी जीवन की समस्या व संघर्ष को यथार्थ रूप से समाज के समक्ष प्रस्तुत करना मेरे शोध कार्य का उद्देश्य है।

शोध विषय का महत्त्व– मानव जीवन का यथार्थ व सूक्ष्म चित्रण होने के कारण 'उपन्यास' गद्य की सर्वाधिक लोकप्रिय विधा है जो कि मेरे मन के अधिक निकट है। वास्तव में हिन्दी–साहित्य जगत में उपन्यास विधा अपना विशिष्ट स्थान रखती है। प्रस्तुत शोध विषय में **''प्रतिनिधि हिन्दी उपन्यासों में चित्रित आदिवासी जीवन मूल्य (सन् 2000–2015)''**का अध्ययन किया जायेगा। आज जरूरी जान पड़ता है कि हमें पीछे छूटे हुए लोगों को अपने बराबर लाना है और साथ ही उनके मूल्यों को संरक्षित भी करना है। संरक्षण की इस प्रक्रिया में मेरे शोध प्रबन्ध के द्वारा भी तुच्छ योगदान दिया जायेगा।

मधु काँकरिया का उपन्यास 'खुले गगन के लाल सितारे' नक्सलवादी आन्दोलन को केन्द्र में रखकर लिखा गया है। इस उपन्यास में समाज में अधिकारों की माँग की गई है। रणेन्द्र कृत 'ग्लोबल गाँव का देवता' उपन्यास में भूमण्डलीकरण के परिणाम स्वरूप आदिवासियों की तबाही, बरबादी, लूट, बेदखली आदि का चित्रण किया गया है तो वहीं तेजिन्दर ने 'काला पादरी' उपन्यास के माध्यम से सामाजिक और आर्थिक विषमता के साथ–साथ उनके जीवन संघर्ष को भी अभिव्यक्त किया है। संजीव के उपन्यास 'जंगल जहाँ से शुरू होता है' श्री प्रकाश मिश्र का 'जहाँ बाँस फूलते हैं' और मनमोहन पाठक कृत 'गगन घटा घहरानी' आदि उपन्यासों के माध्यम से आदिवासी जीवन की समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया गया है। पुन्नी सिंह का 'सहराना' उपन्यास में आदिवासियों के शोषण और नाना प्रकार की पीड़ाओं को केन्द्र में रखकर लिखा गया है। श्री प्रकाश मिश्र कृत 'रूपतिल्ली की कथा' में आदिवासियों को हिन्दु ईसाई धर्म के ठेकेदारों द्वारा परम्परा धार्मिक समस्याओं को छोड़कर अपनी–अपनी ओर खींचने का प्रयास किया जाता है अतः इस उपन्यास में मुख्य रूप से धार्मिक समस्याओं को उजागर किया है। राजीव रंजन कृत 'आमचो बस्तर' उपन्यास के माध्यम

से आदिवासियों की आस्था को केन्द्र में रखकर उनके धार्मिक व सांस्कृतिक पहलुओं को भी बखूबी चित्रित किया है। राकेश कुमार सिंह ने 'पठार पर कोहरा' उपन्यास के माध्यम से शासन तन्त्र के भ्रष्टाचार का चित्रण किया गया है। मैत्रेयी पुष्पा कृत 'अल्मा कबूतरी' उपन्यास के माध्यम से आदिवासी नारियों की शोषण की समस्या को उजागर किया गया है, तो वहीं 'जो इतिहास में नहीं है' उपन्यास में उस वृतान्त को जीवित किया गया है जो 1857 के पहले ही आदिवासियों को स्वतन्त्रता संग्राम में ला खड़ा किया गया था अर्थात् इस उपन्यास में मुख्य रूप से आदिवासियों के आन्दोलन को केन्द्र में रखकर लिखा गया है, तो वहीं महुआ माजी ने अपने उपन्यास 'मरंग गोड़ा नीलकण्ठ हुआ' के माध्यम से आदिवासियों के जीवन में निहित बेरोजगारी की समस्या को उजागर किया है। हरिराम मीणा कृत उपन्यास 'घूणी तपे तीर' के माध्यम से ब्रिटिश कालीन आदिवासी विद्रोह संघर्ष व बलिदान की घटना का चित्रण किया गया है। तो इसी प्रकार मंगल सिंह मुण्डा कृत 'छैला सन्दु' उपन्यास के माध्यम से मुण्डा समुदाय के अन्धविश्वासों, रीति–रिवाजों, जादू–टोना, सामंती, परिवेश, अखड़ा, नृत्य, ईर्ष्या, द्वेष का वर्णन करते हुए उनके अन्तर्द्वन्द्वों को दिखाने का प्रयास किया गया है साथ ही साथ वाल्टर मेगरा (तरूण) कृत 'लौटते हुए' उपन्यास के माध्यम से आदिवासियों के बीच व्याप्त अशिक्षा, गरीबी और नशाखोरी आदि समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है। तो वहीं रणेन्द्र के उपन्यास 'गायब होता देश' में आदिवासियों से भूमि हड़पने की समस्याओं का चित्रण किया गया है।

निष्कर्षतः कह सकते हैं कि आदिवासी साहित्य अपने दायरों में उत्पीड़ित अस्मिताओं के प्रति संवेदनशील है। आदिवासी हिन्दी लेखकों ने आदिवासी समाज की समस्त समस्याओं को बड़े ही सूक्ष्म रूप से यथार्थ के धरातल पर उतारा है।

अनुसन्धान पद्धति–मनुष्य एक ऐसा जिज्ञासु और बुद्धिजीवी प्राणी है जो अपनी जिज्ञासा को शान्त करने के लिए निरन्तर खोज, शोध व अनुसंधान करता रहता है। मानव की यह जिज्ञासु प्रवृत्ति जन्मजात होती है जिसके कारण अनुसंधान उसके जीवन के हर क्षेत्र में चलता ही रहता है। साहित्य के क्षेत्र में चलने वाला अनुसंधान एक विशेष प्रकार का होता है क्योंकि यह साहित्य में विद्यमान समाज के यथार्थ को लेकर चलता है। श्रद्धा, लगन, निष्ठा व अथक

परिश्रम से किया जाने के कारण अनुसन्धान स्थायी ज्ञान प्राप्ति का एक सशक्त माध्यम भी है। अनुसंधान की अनेक पद्धतियाँ प्रचलन में हैं। मेरे शोध में **''प्रतिनिधि हिन्दी उपन्यासों में चित्रित आदिवासी जीवन मूल्य (सन् 2000–2015)''** का अध्ययन किया जायेगा साथ ही जीवन मूल्य के अध्ययन हेतु सर्वेक्षण का प्रयोग किया जाएगा। इसके साथ ही विवेचनात्मक, वर्णात्मक, आलोचनात्मक और विवरणात्मक पद्धतियों का भी अवलम्ब लिया जाएगा। अन्त में सम्पूर्ण शोध–विषय का निष्कर्ष दिया जायेगा।

प्रस्तुत शोध विषय से पूर्व हुआ कार्य– शोध कार्य हेतु हिन्दी के प्रमुख उपन्यासकारों पर मेरे द्वारा चयनित विषय **''प्रतिनिधि हिन्दी उपन्यासों में चित्रित आदिवासी जीवन मूल्य (सन् 2000–2015)''**पर मेरी दृष्टि में अभी तक कोई शोध कार्य नहीं हुआ है। उपन्यास साहित्य पर जिस भी विश्वविद्यालय में अनुसंधान कार्य व लघु शोध कार्य हुआ है वह मेरे शोध कार्य के विषय से बिल्कुल भिन्न है। मेरे शोध कार्य से पूर्व उपन्यास साहित्य पर जिन विषयों को लेकर शोध कार्य किया गया है उसकी सूची नीचे दी जा रही है जिसके द्वारा यह निर्धारित हो जाता है कि मेरे शोध कार्य का विषय मौलिक व भिन्नता लिए हुए है।

1. हिन्दी उपन्यासों में आदिवासी जीवन

शोध छात्र– ईश्वर भाई एल. राठवा

निर्देशक– डॉ. श्री राम त्रिपाठी

गुजरात यूनिवर्सिटी

2. बस्तर के आदिवासियों के नामों का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन

शोधार्थी– शिरीन लाखे

निर्देशक– डॉ. रमेशचन्द्र महरोत्रा

रविशंकर विश्वविद्यालय (1988)

3. स्वातन्त्रयोत्तर हिन्दी उपन्यास साहित्य में आदिवासी जीवन

शोधकर्ता– रमेश चन्द मीणा

निर्देशक– डॉ. पुरूषोत्तम अग्रवाल

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।

4. मुण्डारी आदिवासी गीतों में जीवन राग एवं आकांक्षाएँ

शोधकर्ता– अनुज लुगुन

निर्देशक– डॉ. आशीष त्रिपाठी

काशी हिन्दु विश्वविद्यालय

प्रस्तुत शोध विषय की व्याप्ति–शोध विषय का अनुसन्धान सुचारु रूप से सम्पन्न करने हेतु विषय का नियोजित होना आवश्यक है। शोध कार्य की सुविधा की दृष्टि से मैंने अपने शोध विषय **''प्रतिनिधि हिन्दी उपन्यासों में चित्रित आदिवासी जीवन मूल्य (सन् 2000 से 2015)''** को निम्नलिखित अध्यायों में बाँटा है–

''प्रतिनिधि हिन्दी उपन्यासों में चित्रित आदिवासी जीवन मूल्य (सन् 2000 से 2015)''

भूमिका

प्रथम अध्याय–पृष्ठभूमि

1. प्रतिनिधि हिन्दी आदिवासी उपन्यासकार व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व

(क) व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व एक परिचय

1.	मधु काँकरिया	–	खुले गगन के लाल सितारे (2000)
2.	रणेन्द्र	–	ग्लोबल गाँव का देवता (2001)
			गायब होता देश (2014)
3.	तेजिन्दर	–	काला पादरी (2002)
4.	राकेश कुमार सिंह	–	पठार पर कोहरा (2003)
			जो इतिहास में नहीं है (2005)
5.	मंगल सिंह मुण्डा	–	छैला सन्दु (2004)
6.	भगवान दास मोरवाल	–	काला पहाड़ (2004)
7.	विनोद कुमार शुक्ल	–	समर शेष है (2005)

			टुंडी की ट्रेजिडी (2007)
8.	वाल्टर मगंरा तरूण	–	लौटते हुए (2005)
9.	श्री प्रकाश मिश्र	–	रूपतिल्ली की कथा (2006)
			जहाँ बाँस फूलते हैं (2011)
10.	हरिराम मीणा	–	धूणी तपे तीर (2008)
			जंगल जंगल जलियावाला (2008)
11.	संजीव रंजन प्रसाद	–	धार (2009)
			जंगल जहाँ शुरू होता है (2010)
12.	पुन्नी सिंह	–	सहराना (2010)
13.	मैत्रेयी पुष्पा	–	अल्मा कबूतरी (2011)
14.	राजीव रंजन प्रसाद	–	आमचो बस्तर (2012)
15.	विद्यासागर नौटियाल	–	मेरा जामक वापस दो (2012)
16.	विपिन बिहारी	–	हमलावर (2013)
17.	मनमोहन पाठक	–	गगन घटा घहरानी (2015)
18.	महुआ माजी	–	मरंग गोड़ा नीलकण्ठ हुआ (2015)

(ख) उपन्यास का स्वरूप और परंपरा

द्वितीय अध्याय – आदिवासी समाज का जीवन संघर्ष और जीवन मूल्यः सैद्धान्तिक सर्वेक्षण

- ➢ आदिवासीः पृष्ठभूमि
- ➢ आदिवासीः अर्थ, परिभाषा और विकास
- ➢ आदिवासीः अवधारणा एवं वर्गीकरण
- ➢ भारत में आदिवासी समाजः स्वरूप और समस्याएँ
- ➢ आदिवासी संस्कृतिः विकासात्मक अध्ययन (लक्षण, विशेषताएँ)
- ➢ आदिवासी जीवनः हिन्दी उपन्यास

- जीवन मूल्यः अर्थ, परिभाषा और विकास
- जीवन मूल्यः भारतीय और पाश्चात्य दृष्टिकोण
- जीवन मूल्यः वर्गीकरण (सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक)
- आदिवासी संस्कृति में निहित जीवन मूल्य संबंधी वैशिष्ट्य तथा मुख्य धारा से उनका संघर्ष

तृतीय अध्याय – आदिवासी प्रतिनिधि हिन्दी उपन्यासों में सामाजिक मूल्य

- वर्ण व्यवस्था और आदिवासी समुदाय
- आदिवासी समाज और ज्वलन्त समस्याएँ
- आदिवासी अस्मिता का संकट और संघर्ष
- आदिवासी समाज की स्त्री दृष्टि
- अशिक्षा, विस्थापन और विघटन
- अन्य

चतुर्थ अध्याय – आदिवासी प्रतिनिधि हिन्दी उपन्यासों में राजनीतिक मूल्य

- संविधान और आदिवासी अधिकार
- स्वातन्त्र्योत्तर राजनीतिक समस्या
- आदिवासी समाज और सम्प्रदायिकता
- भ्रष्टाचार
- राजनीतिक सत्तातन्त्र और आदिवासी
- अन्य

पंचम अध्याय –आदिवासी प्रतिनिधि हिन्दी उपन्यासों में आर्थिक मूल्य

- कृषि
- गरीबी और भूमिहीनता
- बेरोजगारी और अशिक्षा
- अर्थोपार्जन के विविध रूप
- आर्थिक शोषण
- जंगल के साथ सम्बन्ध
- आवास और मूलभूत सुविधा का अभाव
- आदिवासी जनजीवन और भूमण्डलीकरण
- विकास के लिए किये गए प्रयास और उनके प्रभाव
- अन्य

षष्ठ अध्याय–आदिवासी प्रतिनिधि हिन्दी उपन्यासों में धार्मिक और सांस्कृतिक मूल्य

- आदिवासियों के धार्मिक विश्वास और रूढ़ियाँ
- आदिवासी समाज और धर्मान्तरण
- आदिवासी संस्कृति, लोकविश्वास एवं परम्परा
- खान–पान, उत्सव, त्यौहार और मान्यताएँ
- अन्य

सप्तम् अध्याय – आदिवासी प्रतिनिधि हिन्दी उपन्यासों में चित्रित आदिवासी जीवन मूल्यों की उपलब्धियाँ एवं मूल्यांकन

- **उपसंहार**
- **परिशिष्ट**

- आधार ग्रन्थ
- सहायक ग्रन्थ
- पत्र–पत्रिकाएँ
- कोश

शोधार्थिनी

उपमा शर्मा

आधार ग्रन्थ

1. खुले गगन के लाल सितारे : मधु काँकरिया, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2000
2. ग्लोबल गाँव का देवता : रणेन्द्र, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, 2001
3. काला पादरी : तेजिन्दर, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 2002
4. छैला सन्दु : मंगल सिंह मुण्डा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2004
5. काला पहाड़ : भगवानदास मोखाल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2004
6. समर शेष है : विनोद कुमार शुक्ल, नई दिल्ली, नई दिल्ली प्रकाशन संस्थान, 2005
7. लौटते हुए : वाल्टर मेंगरा 'तरूण', सत्य भारतीय प्रकाशन राँची, 2005
8. जो इतिहास में नहीं है : राकेश कुमार सिंह, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006
9. रूपतिल्ली की कथा : श्री प्रकाश मिश्र, लोक भारतीय प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006
10. टुंडी की ट्रेजडी : विनोद कुमार शुक्ल, राँची देशज प्रकाशन, 2007
11. जंगल–जंगल जलियावाला : हरिराम मीणा, नेहा प्रकाशन, 2008
12. धूणी तपे तीर : हरिराम मीणा, इतिहास बोध प्रकाशन, 2008
13. धार : संजीव, राधाकृष्ण प्रकाशन, 2009
14. सहराना : पुन्नी सिंह, हिन्दी बुक सेन्टर, 2010
15. जहाँ बाँस फूलते हैं : श्री प्रकाश मिश्र, राज प्रकाशन, 2011
16. अल्मा कबूतरी : मैत्रेयी पुष्पा, हिन्दी बुक सेन्टर, 2011
17. आमचो बस्तर : राजीव रंजन प्रसाद, यश प्रकाशन, 2012
18. मेरा जामक वापस दो : विद्यासागर नौटियाल, किताब घर प्रकाशन, 2012
19. हमलावर : विपिन बिहारी, श्री नटराज प्रकाशन, 2013
20. गायब होता देश : रणेन्द्र, पेंगूइन बुक्स, 2014
21. गगन घटा घहरानी : मनमोहन पाठक, कतार प्रकाशन, धनबाद, 2015
22. मरंग गोड़ा नीलकण्ठ हुआ : महुआ माजी, हिन्दी बुक सेन्टर, 2015

सहायक ग्रन्थ :

1. आदिवासी कौन? : रमणिका गुप्ता, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2007
2. आदिवासी लोक, भाग–1 : रमणिका गुप्ता, शिल्पायन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2006
3. आदिवासी लोक, भाग–2 : रमणिका गुप्ता, शिल्पायन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2006
4. आदिवासी विकास : एक सैद्धान्तिक विवेचन : डॉ. ब्रह्मदेव शर्मा, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, संस्करण, 1986
5. आदिवासी समाज और शिक्षा : रामशरण जोशी, अनु. अरूणप्रकाश, ग्रन्थशिल्पी, नई दिल्ली
6. आदिवासी समाज का समाजशास्त्र : एस. जी. दवे, जे. के. दवे, अनड़ा बुक डिपो, अहमदाबाद, संस्करण, 2007
7. आदिवासी स्वर और नयी शताब्दी : संपा. रमणिका गुप्ता, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2002
8. भारत की आदिवासी समस्याएँ : जी.जे. पटेल, एन. पी. शुक्ल, जमनादास कंपनी, अहमदाबाद, प्रथम संस्करण, 1994–95
9. भारत के आदिवासीः विकास की समस्याएँ : पी. आर. नायडू, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण, 2002
10. भारत के मूल आदिम मानव भील : देवीलाल, एकलव्य आदिवासी प्रकाशन., जोधपुर, प्रथम संस्करण, 2000
11. भारतीय उपन्यास परंपरा और ग्रामकेन्द्री उपन्यास : भोलाभाई पटेल, रंगद्वार प्रकाशन, अहमदाबाद, प्रथम संस्करण, 2000
12. भील देश, राज्य एवं ठिकाने : देवीलाल, एकलव्य आदवासी प्रकाशन., जोधपुर, प्रथम संस्करण, 1999
13. मुण्डा आदिवासियों की भाषाएँ और उनकी संस्कृति : डॉ. रूपांशुमाला, जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, 1999
14. संथाल आदिवासी : चारूलाल मुखर्जी, अनु. पुरुषोत्तम शाह, गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद,

15. हिन्दी के जनजाति मूलक उपन्यासों की समाजशास्त्रीय चेतना और उसका औपन्यासिक प्रतिफलन – डॉ. सरोज अग्रवाल, हिन्दी बुक सेन्टर, नई दिल्ली, 2004

पत्र–पत्रिकाएँ

1. वाङ्मय (आदिवासी विशेषांक–1) डॉ. एम. फीरोज़ अहमद, अलीगढ़, त्रैमासिक जुलाई 2013
2. कथा क्रम (आदिवासी समाज और समाज विशेषांक), शैलेन्द्र सागर, लखनऊ, त्रैमासिक अक्टूबर–दिसम्बर 2011
3. अराबली उद्घोष (सामाजिक साहित्यिक जन चेतना की सामयिक पत्रिका), डॉ. जनक सिंह मीणा, जुलाई–दिसम्बर, 2014
4. वाङ्मय (आदिवासी विशेषांक–2) डॉ. एम. फीरोज़ अहमद, अलीगढ़, त्रैमासिक जुलाई 2014
5. अखिल विश्व ई पत्रिका, गोपाल बघेल 'मधु', सितम्बर 2013, मासिक पत्रिका
6. अपनी माटी ई पत्रिका – अशोक जमनानी, अंक (19) दलित–आदिवासी विशेषांक सितम्बर–नवम्बर, (2015) चित्तौड़गढ़